Fy – यीशु ने अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी की मत्ती १६:२१-२६;
मरकुस ८:३१-३७; लूका ९:२२-२५ | 1

– Save This Page as a PDF–

यीशु ने अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी की

मत्ती १६:२१-२६; मरकुस ८:३१-३७; लूका ९:२२-२५

खोदाई: यीशु के अनुसार, सच्ची शिष्यता की कीमत क्या है? जब कुछ लोगों को पता चलता है कि येशुआ का सच्चा अनुयायी होना महंगा है तो उनकी क्या प्रतिक्रिया होती है? लागत पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है? मसीहा के लिए अपना जीवन खोने का क्या मतलब है? पूरी दुनिया को हासिल करने का क्या मतलब है?

चिंतन: आप किन तरीकों से खुद को नकारने और अपना क्रूस उठाने की कोशिश कर रहे हैं? उस समय के बारे में सोचें जब आप इस तथ्य को छिपाना चाहते थे कि आप विश्वासी हैं। किस कारण से आप चुप रहना चाहते थे? एक विश्वासी का जीवन एक गैर-विश्वासी के जीवन से किस प्रकार भिन्न होना चाहिए? सच्चा शिष्य बनने के लिए आपको क्या बदलने की आवश्यकता है? जो व्यक्ति प्रभु द्वारा दिए गए आदेशों का पालन करता है उसके लिए पुरस्कार क्या है? स्वयं को नकारने और आत्म-त्याग के बीच क्या अंतर है?

जैसा कि पतरस के कबूलनामे ने इज़राइल की ओर से आंशिक दृष्टि के मुद्दे को चित्रित किया है (देखें Fs – इस चट्टान पर मैं अपना कलसिया बनाऊंगा), यह खंड, कैसरिया फिलिप्पी में रहते हुए, आंशिक अंधापन के मुद्दे को चित्रित करेगा।

हालाँकि मसीहाई रहस्योद्घाटन को फिलहाल निजी रखा जाना था, येशुआ ने उस अवसर का उपयोग अपने शिष्यों को उन घटनाओं की याद दिलाने के लिए किया जो उसका इंतजार कर रही थीं। पहली बार, यीशु ने अपने जुनून, या अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी की थी। पतरस के कबूलनामे के बाद ही येशुआ ने मृत्यु और पुनरुत्थान के अपने कार्यक्रम की व्याख्या करना शुरू किया। परिणामस्वरूप, वह अपने मिशन के इस पहलू से निपटना शुरू करता है। जैसे-जैसे उनकी मृत्यु का समय निकट आएगा, प्रभु इसे और अधिक विस्तार से समझाएंगे। इस समय तक ईसा मसीह पृथ्वी पर अपने जीवन के अंतिम वर्ष में थे।

लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह उन्हें कितनी बार बताता है, या वह उन्हें क्या बताता है, वे कभी भी पूरी तरह से नहीं समझते हैं। यह आंशिक अंधेपन का मामला है। इसलिए जब यीशु की मृत्यु हुई, तो वे सतर्क हो गए। इस बिंदु पर मसीहा ने चार चरणों का उल्लेख करते हुए इसे सरल रखा: (१) उसे यरूशलेम जाना होगा, (२) वहां उसे यहूदी नेतृत्व द्वारा अस्वीकार किए जाने पर कष्ट सहना होगा, (३) उसे मार दिया जाएगा, और (४) उसे तीसरे दिन फिर उठें।

Fy – यीशु ने अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी की मत्ती १६:२१-२६;
मरकुस ८:३१-३७; लूका ९:२२-२५ | 2



उस समय से, येशुआ ने अपने प्रेरितों को यह
सिखाना शुरू कर दिया कि उसके साथ क्या होने वाला है। मेशियाच का आगमन वैसा नहीं होगा जैसी आमतौर पर उम्मीद की जाती है। यह उनके प्रथम आगमन पर बहुत धूमधाम और उत्सव के साथ नहीं बल्कि गंभीरता के साथ होगा। उन्होंने कहा: मनुष्य के पुत्र को यरूशलेम जाना होगा और कई चीजें भुगतनी होंगी (यशायाह Jd पर मेरी टिप्पणी देखें – फिर भी उसे कुचलने और उसे पीड़ा देने के लिए प्रभु को खुशी हुई)। वहां उसे महान महासभा, या बुजुर्गों, सदूकियों और टोरा-शिक्षकों द्वारा अस्वीकार कर दिया जाएगा (मती १६:२१ए; मरकुस ८:३१ए; लूका ९:२२ए)। निश्चित लेख प्रत्येक समूह के सामने समान अपराध दर्शाते हुए प्रकट होता है। यह इतना आश्चर्यजनक नहीं होना चाहिए था क्योंकि यीशु को पहले से ही उन्हीं रब्बी नेताओं में से कई लोगों द्वारा महत्वपूर्ण सार्वजनिक अस्वीकृति का अनुभव हो चुका था। लेकिन जेरूसलम टकराव की तीव्रता उनके द्वारा पहले अनुभव की गई किसी भी चीज़ से कहीं अधिक होगी।

यह तीन बार में से पहली बार है जब यीशु ने अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी की है (दूसरी बार देखें Ge– यीशु दूसरी बार अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी करता है, और तीसरी बार देखें Im– मनुष्य का पुत्र सेवा करने और अपना जीवन देने के लिए आया था कई लोगों के लिए फिरौती)। मसीह ने विस्तार से बताया कि उसे (दीया) एक शत्रुतापूर्ण भीड़ द्वारा अवश्य मार डाला जाना चाहिए। शब्द अवश्य, या ग्रीक शब्द दीया का अर्थ है यह आवश्यक था। यह शब्द क्रॉस की अपरिहार्यता की ओर इशारा करता है। यदि कहानी का अंत यही होता तो यह वास्तव में दुखद होता, लेकिन यीशु अधिक आवश्यक जानकारी प्रकट करते हैं। उसने अपने चेलों को आश्वासन दिया कि तीसरे दिन उसे जीवित कर दिया जाएगा (मत्तीयाहु १६:२१बी; मरकुस ८:३१बी; लूका ९:२२बी)। यद्यपि संघर्ष और अस्वीकृति का समय आ रहा था, यह सब मेशियाक के पीड़ित सेवक के रूप में प्रथम आगमन के लिए प्रभु की भविष्यवाणी योजना का एक हिस्सा होगा (यशायाह ५३)।

ऊँचे-ऊँचे लक्ष्य निर्धारित करना आसान है जिन्हें अक्सर दिल और तैयारी की कड़ी मेहनत के कारण भुला दिया जाता है। बहुत से लोग मन से चैंपियन होते हैं। लेकिन गौरव से पहले के कठिन प्रशिक्षण और अकेलेपन का कर्ज बहुत कम लोग चुकाते हैं। उस समय के बारे में सोचें जब किसी गतिविधि में आपकी भागीदारी के लिए महत्वपूर्ण अनुशासन या बलिदान की आवश्यकता होती है। इसका आपके जीवन के किन पहलुओं पर प्रभाव

Fy – यीशु ने अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी की मत्ती १६:२१-२६;
मरकुस ८:३१-३७; लूका ९:२२-२५ | 3

पड़ा? इस प्रक्रिया में आपने अपने बारे में क्या सीखा?

यह जानना महत्वपूर्ण है कि रब्बियों ने आने वाले मसीहा के दो मिशनों के पुख्ता सबूत भी देखे। जाहिर है, मेशियाक बेन डेविड पर ध्यान केंद्रित करने वाले कई लोग इज़राइल के सभी दुश्मनों को उखाड़ फेंकेंगे और पृथ्वी पर परमेश्वर का राज्य स्थापित करेंगे (यशायाह अध्याय ९ और ११)। लेकिन रब्बियों ने यह भी स्वीकार किया कि ऐसे कई वर्णन हैं कि मसीहा बेन जोसेफ किसी तरह दुनिया के हाथों पीड़ित होंगे।

चूँकि पीड़ित मसीहा की यह तस्वीर आने वाले राजा के वादों से बहुत अलग थी, इसलिए कुछ तल्मूडिक रब्बियों का विचार था कि शायद दो अलग-अलग मसीहा होंगे। यह कैसे हो सकता है इस पर बहस हुई, लेकिन एक दृष्टिकोण यह था कि यूसुफ का पुत्र आएगा और दुनिया द्वारा अस्वीकार कर दिया जाएगा (उत्पत्ति के जोसेफ की तरह), शायद एक युद्ध में भी मारा जाएगा (ट्रैक्टेट सुक्खा ५२ए, जो जकर्याह १२:१० को उद्धृत करता है) मेशियाच बेन जोसेफ की मृत्यु)! तभी दाऊद का पुत्र पहले मसीहा और पूरे इस्राएल को बचाने आएगा।

यह बताया जाना चाहिए कि बाइबल कभी भी दो मसीहा की बात नहीं करती है। मेशियाच की इन दोनों विपरीत तस्वीरों को एक व्यक्ति कैसे पूरा कर सकता है? यीशु सटीक उत्तर देते हैं कि वह, ईश्वर के एकमात्र सच्चे मसीहा के रूप में, बेन जोसेफ (पीड़ा द्वारा) और बेन डेविड (पुनरुत्थान द्वारा) के दोनों मिशनों को पूरा करेंगे। यह एक ही व्यक्ति में दोनों मिशनों को पूरा करने का सबसे सही तरीका है (देखें Mv – दो मसीहा की यहूदी अवधारणा)!

उन्होंने इस बारे में स्पष्ट रूप से बात की (मरकुस ८:३२ए)। क्रिया अपूर्ण है, निरंतर क्रिया दर्शाती है। हमारे प्रभु ने बार-बार और विस्तार से उन्हें वह बताया जो उन्हें बताना था। यह कोई त्वरित, संक्षिप्त बयान नहीं था। यह शब्द स्पष्ट रूप से ग्रीक शब्द पारेसिया है। दूसरे शब्दों में, उन्होंने खुलकर, स्पष्टता से बात की। यह सामान्य ग्रीक शब्द है जिसका अर्थ आंशिक या पूर्ण मौन के विपरीत स्पष्ट, अनारक्षित भाषण है। यहां, जैसा कि योचनान ११:१४, १६:२५, २९ में है, इसका अर्थ संकेतों या छिपे हुए संकेतों के विपरीत स्पष्ट भाषण है, जैसे कि यीशु ने पहले दिया था: लेकिन वह समय आएगा जब दूल्हे को उनसे छीन लिया जाएगा, और आगे उस दिन वे उपवास करेंगे (मरकुस २:२०)।

लेकिन हर बार जब येशुआ ने अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी की, तो एक या अधिक शिष्यों ने गर्व या गलतफहमी के साथ जवाब दिया। यहाँ, पतरस, जिसने कैसरिया फिलिप्पी में इतनी शानदार ढंग से परीक्षा उत्तीर्ण की, यहाँ बुरी तरह विफल रहा। पतरस उसे एक तरफ ले गया (लेकिन जाहिर तौर पर ज्यादा दूर नहीं) और उसे डांटने लगा (मरकुस ८:३२बी)। डांट-फटकार बहुत कड़ा शब्द है। इसका अर्थ है आलोचना करना, फटकारना, शारीरिक बल का प्रयोग करके भी किसी कार्य को होने से रोकना। पतरस के लिए यह काफी

Fy – यीशु ने अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी की मत्ती १६:२१-२६;
मरकुस ८:३१-३७; लूका ९:२२-२५ | 4

विरोधाभास था। कैसरिया फिलिप्पी में उसने यीशु को मसीहा के रूप में पहचाना, यहाँ उसने मसीह को फटकार लगाई, इस प्रकार उसने उद्धारकर्ता की नियति के बारे में अपनी अधूरी समझ को दर्शाया। कभी नहीं प्रभु! उसने कहा। आपके साथ ऐसा कभी नहीं होगा (मत्तीयाहु १६:२२)!

परन्तु जब यीशु ने तेजी से घूमकर अपने प्रेरितों की ओर देखा। हमारे प्रभु को इस तथ्य के बारे में पता होना चाहिए कि अन्य शिष्यों ने पतरस ने जो कहा था, उसे सुना था, क्योंकि अगर उन्होंने ऐसा नहीं किया होता, तो केफा को उन सभी के सामने जो सबक मिला, उसे भुगतने की कोई जरूरत नहीं थी। तब उसने पतरस को डाँटा। मरकुस उसी शब्द (ग्रीक: एपिटिमाओ) का उपयोग करता है जिसका उपयोग उसने पतरस द्वारा येशुआ को डांटने के लिए किया था। उसने कहा: मेरे पीछे आओ शैतान! मसीहा ने जंगल में शैतान के प्रलोभन की पुनरावृत्ति को पहचान लिया। वहाँ उस ने जगत का सारा राज्य उसे दिखाकर यीशु से कहा, यदि तू झुककर मुझे दण्डवत् करे, तो मैं यह सब तुझे दे दूंगा। (मत्ती ४:८-९) यह क्रूस के चारों ओर घूमने और इस युग के देवता, शैतान के हाथों से दुनिया पर शासन करने का एक प्रलोभन था (दूसरा कुरिन्थियों ४:४)। और वह प्रभु को प्रलोभित करने के लिये सबसे प्रमुख प्रेरितों का प्रयोग कर रहा था। मुद्दा यह है कि केफा वही चाहता था जो शैतान चाहता था। क्योंकि शमौन पतरस नहीं चाहता था कि यीशु क्रूस पर जाए, इसलिए पतरस उसके लिए शत्रु का काम कर रहा था। यीशु ने पतरस को शैतान नहीं कहा, बल्कि उसने स्रोत को पहचानते हुए सीधे प्रलोभक से बात की, जिसमें फटकार में केफा भी शामिल था।

तुम मेरे लिये ठोकर का कारण हो; आपके मन में ईश्वर की चिंताएं नहीं हैं, बल्कि केवल मानवीय चिंताएं हैं (मती १६:२३; मरकुस ८:३३)। शायद येशुआ पतरस की अस्वीकृति की ओर इशारा कर रहा था कि उसे सीधे शैतान की ओर से आने के कारण मार दिया जाना चाहिए। चूँकि “शैतान” के लिए हिब्रू शब्द का अर्थ विरोध है, दूसरा विकल्प यह है कि पतरस क्रूस के मार्ग में बाधा बन रहा था। किसी भी तरह, केफ़ा को उसके रब्बी द्वारा मानवीय दृष्टिकोण से सोचने के लिए डांटा जाता है, न कि ईश्वर के दृष्टिकोण से। आज भी अक्सर, लोग विनम्रतापूर्वक उनकी बात सुनने के बजाय प्रभु से कहते हैं कि उन्हें अपनी योजनाओं को कैसे पूरा करना चाहिए! आज भी कितने लोग येशु को मसीहा के रूप में अस्वीकार करते हैं क्योंकि वह उनके विचार में फिट नहीं बैठते कि मसीह को क्या करना चाहिए? हमें अपने विचारों की अपेक्षा ईश्वर और उनके वचनों को अधिक सुनना बुद्धिमानी होगी।

क्या शैतान विश्वासियों को प्रभावित कर सकता है? हाँ। क्या वह विश्वासियों में वास कर सकता है? नहीं, क्या वह हमारे मन के प्रार्थना उद्यान में हमारी मौन प्रार्थनाओं को सुनता है? नहीं, हमारे हृदय के सिंहासन पर केवल एक के लिए जगह है, और यीशु मसीह उस सिंहासन पर हैं।

हर बार जब प्रेरित गर्व या गलतफहमी के साथ जवाब देते हैं, तो यीशु ने दासत्व या

Fy – यीशु ने अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी की मत्ती १६:२१-२६;
मरकुस ८:३१-३७; लूका ९:२२-२५ | 5

क्रॉस-बेयरिंग शिष्यत्व के बारे में शिक्षा दी। एक पीड़ित मसीहा का उन लोगों के लिए महत्वपूर्ण प्रभाव था जो उसका अनुसरण करेंगे। तब यीशु ने अपने प्रेरितों समेत चेलों की भीड़ को अपने पास बुलाया और उन्हें तीन बातें सिखाईं।

सबसे पहले, यदि आप मसीह का अनुसरण करना चाहते हैं, तो आपको स्वयं को “नहीं” कहना होगा। उन्होंने कहा: जो कोई मेरा शिष्य बनना चाहता है, उसे अपने आप का इन्कार करना चाहिए और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे हो लेना चाहिए (मती १६:२४; मरकुस ८:३४; लूका ९:२३)। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि मसीहा का राज्य हमारे अधिकांश प्राकृतिक झुकावों के बिल्कुल विपरीत है। इसके अलावा, उनका क्रूस उठाने का अर्थ है मसीह की अस्वीकृति की पहचान करना। यदि आप मसीह का अनुसरण करना चाहते हैं, तो आपको उनकी अस्वीकृति की पहचान करनी होगी। एक सच्चा शिष्य वह है जो मसीहा की कष्टकारी भूमिका का पालन करेगा। आत्म-बलिदान मसीहा और उनके अनुयायियों की पहचान है। यीशु के प्रति समर्पण करके, हम वास्तव में उसे वही वापस दे रहे हैं जो शुरू से ही उसका अधिकार है!

मसीह ने जो चुनौतियाँ प्रस्तुत कीं वे अभी भी हमारे जीवन को बाधित करती हैं। इनकार करना, हारना, मरना – ये वे मानक नहीं हैं जिनका उपयोग हमारे आसपास की दुनिया सफल जीवन के लिए करती है। हमें ऐसे बलिदानों से बचने, अपना ख्याल रखने के लिए प्रशिक्षित किया गया है। लेकिन येशुआ बिना माफ़ी मांगे हमारे सामने खड़ा होता है और पूछता है, “क्या ऐसी कोई चीज़ है जिसे आप मुझसे ज़्यादा महत्व देते हैं?” हमें उस प्रश्न का उत्तर देने में कठिनाई हो सकती है, लेकिन केवल एक ईमानदार उत्तर ही काम आएगा।

मेरे पीछे आओ: आओ शब्द ग्रीक शब्द अकोलौथियो है, इसका मतलब है उसी रास्ते पर चलना जिस रास्ते पर दूसरे चलते हैं। इसका उपयोग एसोसिएटिव इंस्ट्रुमेंटल केस के साथ किया जाता है। यह ऐसा है मानो यीशु कह रहे हों: मेरे साथ चलो। विचार दूसरे के पीछे चलने का नहीं है, बल्कि दूसरे व्यक्ति का साथ देने का है, वही रास्ता अपनाने का है जो वह अपनाता है, और रास्ते में उसके साथ संगति करने का है (प्रेरितों ९:२ और २४:१४)।

दूसरा, यद्यपि शिष्यत्व की कीमत महंगी है, यह उन लोगों के लिए और भी अधिक महंगा है जो अपने निर्माता की उपेक्षा करते हैं। आध्यात्मिक दुनिया की एक महान विडंबना में, येशुआ कहते हैं: क्योंकि जो कोई भी अपना जीवन बचाना चाहता है वह इसे खो देगा। हर कोई सुखी और भरपूर जीवन चाहता है। लेकिन जो लोग केवल उस लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करते हैं, उन्हें वास्तव में लक्ष्य चूक जाने का खतरा होता है। आज बहुत से लोग जीवन खोजने का प्रयास करते समय वास्तव में अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य को नष्ट कर रहे हैं!

फिर भी विडंबना समीकरण के विपरीत पक्ष पर भी लागू होती है: लेकिन जो कोई मेरे लिए

Fy – यीशु ने अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी की मत्ती १६:२१-२६;
मरकुस ८:३१-३७; लूका ९:२२-२५ | 6

और सुसमाचार के लिए अपना जीवन खो देता है वह इसे बचाएगा (मती १६:२५; मरकुस ८:३५; लूका ९:२४)। जब आप अपने आप से भरे होते हैं, तो प्रभु आपको नहीं भर सकते। लेकिन जब आप अपने आप को खाली कर देते हैं, तो प्रभु के पास एक उपयोगी बर्तन होता है। धर्मग्रंथ उन लोगों के उदाहरणों से भरे पड़े हैं जिन्होंने ऐसा ही किया। मती ने अपने सुसमाचार में केवल दो बार अपने नाम का उल्लेख किया है। दोनों बार वह खुद को महसूल लेनेवाला बताता है। अपने प्रेरितों की सूची में वह स्वयं को आठवां स्थान देते हैं। युहन्ना अपने सुसमाचार में अपने नाम का भी उल्लेख नहीं करता है। “युहन्ना” की सभी बीस उपस्थितियाँ बप्तिस्मा देनेबाला को संदर्भित करती हैं। प्रेरित यूहन्ना स्वयं को अन्य शिष्य (युहन्ना १३:२३ सीजेबी) या उसके शिष्यों में से एक कहता है, जिसे येशुआ विशेष रूप से प्यार करता था (युहन्ना २०:३ सीजेबी)। लूका ने लूका का सुसमाचार और प्रेरितों की पुस्तक, बाइबिल की दो सबसे महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखीं, लेकिन कभी भी अपना नाम नहीं लिखा!

प्रभु में आनंद और संसार में आनंद के बीच अंतर को समझना जरूरी है। युहन्ना और जुडास इस्करियोती को छोड़कर, सभी प्रेरित शहीद हो गए (देखें Cy – ये बारह प्रेरितों के नाम हैं)। विश्वासियों को दुनिया में उनकी परिस्थितियों के बावजूद मसीहा में खुशी होनी चाहिए। पतरस को उसके शरीर को उल्टा करके क्रूस पर चढ़ाया गया था; अन्द्रियास को भी क्रूस पर चढ़ाया गया था; याकूब का सिर काट दिया गया; फिलिपुस को उसके टखनों में लोहे के हुक से तब तक उल्टा लटकाया गया जब तक वह मर नहीं गया, नथानिएल को जिंदा काट दिया गया; थॉमस को एक भाले से मारा गया था; मती तलवार से मारा गया था; याकूब को मंदिर के ऊंचे शिखर से फेंक दिया गया और फिर पीट-पीटकर मार डाला गया; थैडियस की तीर लगने से मृत्यु हो गई; और शमौन कट्टरपंथी आधा आरी लगने से मर गया। उनमें से कोई भी इससे खुश नहीं था. लेकिन उन सभी को प्रभु का आनंद प्राप्त था क्योंकि वे जानते थे कि अपना जीवन खोकर, वे मसीह में सुरक्षित थे (देखें एम्एस – विश्वासी की शाश्वत सुरक्षा)। ऐसा नहीं है कि जो लोग उसका अनुसरण करते हैं उन्हें शहीद होना पड़ता है, बल्कि यह कि यदि मसीहा के प्रति वफादारी की मांग होती है तो वे शहीद होने को तैयार हैं।

तीसरा, शिष्यत्व एक ऐसी चीज़ है जिसे प्रत्येक विश्वासी सच्ची आध्यात्मिक सुरक्षा और सच्चे धन के लिए प्राप्त करता है। इस दुनिया में ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे लोग अपने जीवन के बदले बदल सकें। यहां तक कि इस वर्तमान युग में सबसे “सफल” व्यक्ति को भी अपनी आत्मा की उपेक्षा करने का हमेशा अफसोस रहेगा। शाश्वत राज्य किसी भी लौकिक प्रशंसा या संपत्ति से कहीं अधिक मूल्यवान है। दरअसल, अंतर की व्यापकता को शब्द भी नहीं समझा सकते। किसी के लिए यह क्या अच्छा होगा कि वह पूरी दुनिया हासिल कर ले, फिर भी अपनी आत्मा खो दे? यहाँ परम अतिशयोक्ति है. “कल्पना करें, यदि आप कर सकते हैं,” येशुआ कह रहा था, “किसी तरह पूरी दुनिया पर कब्ज़ा करना कैसा होगा। इससे क्या स्थायी लाभ होगा, यदि इसे प्राप्त करने में आपने अपनी आत्मा, अपने शाश्वत जीवन को खो दिया है?” ऐसा व्यक्ति एक चलता-फिरता आध्यात्मिक

Fy – यीशु ने अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी की मत्ती १६:२१-२६;
मरकुस ८:३१-३७; लूका ९:२२-२५ | 7

ज़ोंबी होगा जिसके पास अस्थायी रूप से सब कुछ होगा लेकिन जिसने स्वर्ग के बजाय नरक में अनंत काल का सामना किया। या, यीशु ने आगे कहा, इस जीवनकाल के दौरान संभवतः क्या पाने लायक हो सकता है, अगर इसे हासिल करने के लिए आपको अपनी आत्मा का आदान-प्रदान करना होगा (मती १६:२६; मरकुस ८:३६-३७; लूका ९:२५)?

इस दुनिया में हर संभव संपत्ति हासिल करना और फिर भी मसीह के बिना रहना हमेशा के लिए दिवालिया हो जाना है। लेकिन मसीहा के लिए इस दुनिया में सब कुछ त्यागना अनंत काल तक अमीर बने रहना है। १९५६ में इक्वाडोर के क्वेशुआ भारतीयों ने कई अन्य मिशनरियों के साथ जिम इलियट की हत्या कर दी। इस २९ वर्षीय ईसाई शहीद, पति और एक साल की बच्ची के पिता ने अपनी पत्रिका में लिखा था, “वह मूर्ख नहीं है जो उस चीज़ को छोड़ देता है जिसे वह अपने पास नहीं रख सकता, उस चीज़ को पाने के लिए जिसे वह खो नहीं सकता। ”

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि स्मिर्ना में कलसिया के लिए यह कैसा था (प्रकाशितबाक्य– Ba – स्मिर्ना में कलसिया पर मेरी टिप्पणी देखें) जब उन्होंने अपने प्रिय और वृद्ध पादरी को दांव पर जलते हुए देखा था? पॉलीकार्प उसका नाम था. वह यीशु के शिष्य, प्रेरित यूहन्ना का शिष्य था। कोई भी इसे तुरंत बता सकता था क्योंकि उनमें अपने गुरु के समान ही कोमलता और करुणा थी। पॉलीकार्प स्मिर्ना (वर्तमान तुर्की) में कलसिया का बिशप था। स्मिर्ना में उत्पीड़न शुरू हो गया और कई ईसाइयों को मैदान में जंगली जानवरों को खिलाया गया। ईश्वरविहीन और रक्तपिपासु भीड़ ने नेता – पॉलीकार्प के शव की मांग की। अधिकारियों ने उसे खोजने के लिए एक खोज दल भेजा। उसे कुछ ईसाइयों के लिए छिपाकर ले जाया गया था, लेकिन रोमनों ने दो युवा विश्वासियों को तब तक यातना दी जब तक कि उन्होंने अंततः उसके स्थान का खुलासा नहीं कर दिया। जब अधिकारियों के आगमन की घोषणा की गई तब भी पॉलीकार्प को भगाने का समय था लेकिन उन्होंने यह कहते हुए जाने से इनकार कर दिया, “ईश्वर की इच्छा पूरी होगी।”

ईसाई अनुग्रह के सबसे मर्मस्पर्शी उदाहरणों में से एक में, पॉलीकार्प ने अपने बंधकों का इस तरह स्वागत किया जैसे कि वे दोस्त हों। उन्होंने उनसे बात की और आग्रह किया कि वे भोजन करें। ले जाए जाने से पहले उन्होंने केवल एक ही अनुरोध किया – उन्होंने प्रार्थना करने के लिए एक घंटे का समय मांगा। रोमन सैनिकों ने उसकी प्रार्थना सुनी। उनका हृदय पिघल गया और उन्होंने उसे प्रार्थना करने के लिए दो घंटे का समय दिया। उनके मन में भी दूसरे विचार थे और वे एक-दूसरे से पूछते हुए सुने गए कि उन्हें गिरफ्तार करने के लिए क्यों भेजा गया? पॉलीकार्प के आने पर अन्य अधिकारियों ने भी सहानुभूति व्यक्त की। प्रोकोन्सल ने उसे भी रिहा करने का एक रास्ता खोजने की कोशिश की। “ईश्वर को श्राप दो और मैं तुम्हें जाने दूंगा!” उसने विनती की. पॉलीकार्प का उत्तर था: “छियासी वर्षों से मैंने उनकी सेवा की है। उसने मेरे साथ कभी गलत नहीं किया. तो फिर मैं अपने राजा की निंदा कैसे कर सकता हूँ जिसने मुझे बचाया है?” प्रोकोन्सल ने फिर से बाहर निकलने का रास्ता खोजा। “तो

Fy – यीशु ने अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी की मत्ती १६:२१-२६;
मरकुस ८:३१-३७; लूका ९:२२-२५ | 8

फिर ऐसा करो बूढ़े, बस सम्राट की भावना की कसम खाओ और यही काफी होगा।” पॉलीकार्प का उत्तर था: “यदि आप एक पल के लिए कल्पना करते हैं कि मैं ऐसा करूंगा, तो मुझे लगता है कि आप दिखावा करते हैं कि आप नहीं जानते कि मैं कौन हूं। इसे स्पष्ट रूप से सुनो. मैं एक ईसाई हूं।” प्रोकोन्सल की अधिक विनती के बावजूद, पॉलीकार्प दृढ़ रहा। राज्यपाल ने जंगली जानवरों से धमकी दी। पॉलीकार्प का उत्तर था: “उन्हें सामने लाओ। अगर इसका मतलब बुरे से अच्छे की ओर जाना है तो मैं अपना मन बदल लूंगा, लेकिन सही से गलत की ओर नहीं।

प्रोकोन्सल ने धमकी दी, “मैं तुम्हें जिंदा जला दूंगा!” पॉलीकार्प का जवाब था: “आप आग से धमकी देते हैं जो एक घंटे तक जलती है और खत्म हो जाती है लेकिन दुष्टों पर फैसला हमेशा के लिए होता है।” आग ने उसे घेर लिया, लेकिन उसके खून ने आग को बुझा दिया और इसलिए उसे खंजर से मार डाला गया। उन्हें ईसा मसीह के लिए २२ फरवरी, १५५ ई. को दफनाया गया था। यह जितना विजय का दिन था, उतना ही त्रासदी का दिन भी था। पॉलीकार्प ने यीशु को गहराई से जानने की शक्ति का वर्णन किया – इतनी गहराई से कि आग की लपटों में भी उसका अनुसरण किया जा सके। जैसा कि प्रभु ने कहा: किसी के लिए क्या अच्छा होगा कि वह पूरी दुनिया हासिल कर ले, लेकिन फिर भी अपनी आत्मा खो दे?